मेरी रचना कितनी सुन्दर

अंक 2, अगस्त 2021

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक

डॉ़ तबीनाह अंजुम कुरैशी (सीनियर जर्नलिस्ट, आउटलुक पत्रिका)

मार्गदर्शन एवं परिकल्पना

अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान
मनीष सिंह, मंजरी संस्थान, बूंदी
विजय गोयल, रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स (आर.आई.एच.आर.)

संपादक

इन्दिरा पंचोली
महिला जन अधिकार समिति, अजमेर

सहयोग

योगेश वैष्णव	–	विकल्प संस्थान, उदयपुर।
मुरारी थानवी	–	दूसरा दशक परियोजना, बाप, फलौदी जोधपुर।
रिचा औदिच्य	–	जन चेतना संस्थान, आबू रोड सिरोही।
शकुन्तला पामेचा	–	राज समन्द जन विकास संस्थान।
डा. शैलेन्द्र पाण्ड्या	–	गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर
शिवजी राम यादव	–	शिव शिक्षा समिति रानोली, टोंक।
नूर मोहम्मद	–	अलवर मेवात शिक्षा एंव विकास संस्थान, अलवर।
विकास भारद्वाज	–	डांग विकास संस्थान, करौली।

विश्लेषण एवं लेखन

कौमुदी	–	दशम एलाइंस
तरूणा	–	स्नेह आंगन

साथ में, विभिन्न संस्थाओं के बच्चे

प्रकाशन

दशम एलाइंस के द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से
आर.आई.एच.आर. के माध्यम से प्रसारित

ग्राफिक डिजाईनर

आयुष कम्प्यूटर्स एण्ड टाइपिंग इंस्टिट्यूट
9414941489, 8890870215

संपादक की कलम से...

बाल पत्रिका अंक-दो **"मेरी रचना कितनी सुन्दर"** पाठकों को समर्पित करते हुए हमें बेहद खुशी है!!

दशम एलायंस से जुड़ी राजस्थान भर की संस्थाएं कोविड19 का बच्चों पर प्रभाव-उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, हिंसा, संसाधनों का अभाव और जीवन यापन में आ गई रुकावटों को लेकर चिंतित हैं। हम सब मिलकर बच्चों के सम्पूर्ण विकास के बारे में हमेशा से ज्यादा चिंतन और नवाचार करने और एक दूसरे से सीखने के अवसर बना रहे हैं। और ऐसी हर पहल को अपनाने के लिए खुले हैं जिसमें बच्चों के हितों को संरक्षण मिले। यह एक अच्छा संकेत है!!

बच्चों के लिए अभिव्यक्ति और भागीदारी के अवसर बनाने में दशम-एलायंस हमेशा से कुछ न कुछ नवाचार करते रहा है। इस आपदा समय में विविधतापूर्ण और नियमित कार्यक्रम आयोजन; संस्थाओं के लिए वेबिनार-संवाद आदि माध्यमों से मिलने और चिंतन करने के अवसर बनाना; डिजिटल माध्यमों को अपनाने के साथ बच्चों के सुरक्षा उपाय और सतर्कता, बच्चों के लिए नियमित जन वाचन सामग्री का प्रसार और वेब-कार्यशालाओं का आयोजन एक सशक्त कड़ी में आगे बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में मई से जुलाई 2021 के मध्य बच्चों के लिए अभिव्यक्ति और संचार की तकनीकियों को सीखने के लिए डिजाइन की गई पांच पांच दिन की पांच कार्यशालाओं को सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह पत्रिका इन कार्यशालाओं में सहभागी बच्चों की अभिव्यक्तियों, रचनाओं, चित्रों के माध्यम से उनके विचार, अनुभव और अवलोकन को सबके सामने लाने का प्रयास भर है! इसमें आप बच्चों की स्वयं की लिखी हुई या सुनी, पढ़ी और पसंद की गई कहानियां, एक कविता और उनके द्वारा खींची गई तस्वीरों से रु-ब-रु होंगे, तो कोरोना और लोकडाउन के सकारात्मक नकारात्मक प्रभावों के बारे में भी उनके अनुभव जान सकेंगे। वैसे हरेक रचना की अपनी खासियत है. किन्तु कुछ रचनाएं व तस्वीरें बहुत गंभीर हैं, एक नजरिया देती हैं, और बहुत कुछ बोलती और दर्शाती हैं। कई जगह उनकी रोजमर्रा की जिंदगी की एक झलक सामने आती है तो कुछ जगह जिंदगी के कष्ट और कठिनाइयाँ! ये तस्वीरें आशाओं और उम्मीदों से भी भरी हुई है जहाँ कष्टों में भी खुशी के अवसर खोज लेने का जज्बा दिखाई पड़ता है. हमें सोचना चाहिए कि उनको एक बड़ा फलक कैसे मिल सकता है!

इन अवसरों को बनाने और सुगम तरीके से सचांलन के लिए संलग्न टीम को बधाई!! मैं 17 जिलों की उन सभी 22 संस्थाओं का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके प्रयासों से बच्चे इस अवसर का लाभ ले सके। वे 187 बच्चे-सहभागी; जिनकी वजह से सीखने-सिखाने की यह स्पेस रोचक और रंगीन; ऊर्जा भरी और मूल्यवान बन पाई; आप सबके लिए ढेर सारा प्यार और स्नेह. आप इस कड़ी से जुड़े रहिये और अवसरों की मांग करते रहिये!! इस प्रक्रिया का सचांलन, समन्वय, व्यवस्थाएं बहुत अच्छी थीं-नेपथ्य में काम कर रही पूरी टीम को इसके लिए बहुत शाबासी!

उक्त सभी का योगदान अमूल्य है और यह पत्रिका इस सांझी प्रक्रिया को उकेरती एक कृति!! जुड़े रहिये. अपने हिस्से का योगदान करिए और हम सब मिलकर बच्चों के लिए और बड़े केनवास बनायें-इसी आशा के साथ आगे बढ़ते रहेंगे।

आपकी साथी
इंदिरा पंचोली

भूमिका

देश में कोरोना महामारी के दौरान सभी के मन में उठने वाले सवालों में से एक प्रमुख बच्चों की स्कूली शिक्षा का सवाल रहा। शिक्षा में रूकावट से बच्चों में कई तरह के प्रभाव दिखने लगे। बच्चे सीखने सिखाने के अवसरों से वंचित होने लगे। उस स्पेस को खोने की उदासीनता–जहां दोस्त, खेलना, सीखना और भी बहुत कुछ था।

कोरोनाकाल के चलते जहां बच्चे एक ओर स्कूली शिक्षा से वंचित रहे वहीं यूनिसेफ और दशम एलाइंस के साथियों की एक राय और डॉ़ तबीनाह अंजुम के सुझाव पर पांच कार्यशालाएं प्रस्तावित की गयी। इन कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों को मूलरूप से फोटोग्राफी व चित्र लेखन पर कार्य करवाया गया।

बच्चों की दोस्त बनी डॉ़. तबीनाह अंजुम ने बेहद रोचक और दोस्ताना तरीकों से बच्चों के साथ डिजिटल माध्यम से रचनात्मक लेखन, मोबाइल फोन से फोटोग्राफी, स्टोरी राइटिंग की समझ व कई जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को लिखने और पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

बच्चों में हमेशा से सीखने और विकास की प्रक्रिया स्वाभाविक रही है। इन कार्यशालाओं में बच्चों के लिए अपने आस–पास के वातावरण को देखना, उसे अनुभव करना और उसको फोटोग्राफी और कहानी के माध्यम से चित्रांकित करना मजेदार रहा।

इन कार्यशालाओं में 187 बच्चों ने फोटोग्राफी और लेखन के बारे में जाना और कार्यशाला में सीखी गयी सभी बातों को कहानी, कविताओं और अपने द्वारा खींची गयी तस्वीरों के माध्यम से हमें अपने आस–पास के वातावरण के बारे में बताया। इससे उन पर पड़ने वाला प्रभाव दिखाई देता है।

तबीनाह द्वारा इन पांच दिनों की कार्यशाला के दौरान बच्चों को तस्वीरों से कहानी बनाना, तस्वीरें लेना, और तस्वीर में अलग अलग प्रकारों को दिखाना, फोटोग्राफी का इतिहास, कैमरा एवं उसके बुनियादी भाग, कैमरा उपयोग करने के तरीकों के बारे में बताया गया। बच्चों ने प्रकाश, साइड लाइट, बैक लाइट, लिडिंग लाइन, पैटर्न, तिहाई का नियम का उपयोग कर तस्वीरों को रोचक बनाना सीखा। बच्चों को तस्वीर लेना ही नहीं बल्कि हर एक तस्वीर के पीछे की कहानी को पहचानना सिखाया गया।

कार्यशाला में 17 जिलों के 22 संस्थाओं के 187 बच्चों ने अपनी पूर्ण रूप से भागीदारी रखी। इसमें 15ः बच्चे ऐसे थे जिनके एक या दो सत्र छूट गये उन्होंने अन्य सत्रों में जुड़कर सीखने की प्रक्रिया को जारी रखा। कार्यशाला में सिखाये गये तरीकों को बच्चों ने बखूबी अपनी कविता, कहानियों और तस्वीरों के माध्यम से दिखाया।

5 दिवसीय कार्यशाला को बच्चों द्वारा खूब सराहा गया।

डॉ़ तबीनाह अंजुम ने फोटोग्राफी और लेखन की कार्यशाला को बड़े सरल और सहज रूप से सम्पन्न करवाया। कार्यशाला को आयोजित करने का मूल उद्देश्य बच्चों को ऐसी अभिव्यक्ति की स्पेस प्रदान करना था जिसमें वे मजे मजे में काम करें। अपनी भावनाएं और विचार व्यक्त कर सकें और संचार के नए कौशल सीख सकें। इसमें हम सफल रहे।

इस अंक में दूसरी व तीसरी कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी व कविताएं तथा फोटोग्राफ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पाठकगण अपनी प्रतिक्रियाएं भेजेंगे तो खुशी होगी।

कौमुदी
दशम एलाइंस

विषय सूची

शीर्षक	लेखक	पेज नं॰
शेर और तीन बैल	कांकू मीणा	1
सपनों की दुनियां	नगीना यादव	2
शिक्षा का महत्व	पठान खान	4
मदद करना	रूकसाना बानू	6
बचपन	निवेदिता	7
दोस्तों के बिना जीवन	अश्विन एरियल	8
मेंढ़क का साहस	गुड्डी चरपोटा	9
बालिका शिक्षा	मनप्रीत कौर	11
लगन	प्रकाश मेघवाल	13
सेठजी का कर्ज मां का फर्ज	गायत्री खटीक	14
स्कूल के बिना जीवन	सरोज गुर्जर	15
पिता	देवांशु जांगिड़	17
गुरू शिक्षा	चन्द्रेश जांगिड़	18
कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव		32
पहले अंक के प्रभावित होने के साथ बच्चों और सहयोगी संस्थाओं की ओर से प्रतिक्रियाए		33
सहयोगी संस्थाओं द्वारा सुझाव व प्रतिक्रियाएं		34
कार्यशाला-2 में प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची		35
कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय		37

शेर और तीन बैल

तीन बैल आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। वे साथ मिलकर घास चरने जाते और बिना किसी राग-द्वेष के हर चीज आपस में बांटते थे। एक शेर काफी दिनों से उन बैलों के पीछे पड़ा था, लेकिन वह जानता था कि जब तक ये तीनों एकजुट हैं तब तक वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। शेर ने कई बार उन तीनों की दोस्ती तोड़ने की कोशिश की और हर बार वो तीनों मिलकर शेर को हरा देते।

एक दिन शेर ने उन तीनों को एक दूसरे से अलग करने की चाल चली।

उसने उन तीनों की अफवाहें फैलानी शुरू कर दी। अफवाहें सुन-सुनकर उन तीनों के बीच गलतफहमी हो गई। धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से जलने लगे। आखिरकार उनमें झगड़ा हो ही गया और वे अलग-अलग रहने लगे।

शेर के लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। उसने इसका पूरा लाभ उठाया।

एक दिन शेर ने बैलों को अकेले चरते हुए देखा, एक एक कर तीनों बैल के पास गया और तीनों को उसने मार डाला।

सीख :- एकता में ही शक्ति होती है।

✍ कांकू मीणा, कक्षा 10, उम्र 14 वर्ष

सपनों की दुनियां

एक समय की बात है- एक गांव में बबीता नाम की महिला रहती थी। बबीता के परिवार में उसके सास, ससुर, पति रहते थे। कुछ समय बाद बबीता के घर एक लड़की ने जन्म लिया जिसका नाम उन्होंने ज्ञानवती रखा। बबीता का पति रोज कमाने एक कम्पनी में जाता था और बबीता का परिवार कभी-कभी गांव में घूमने जाते थे। बबीता को पशु-पक्षी, हरे-भरे पेड़-पौधे देखना पसंद था। बबीता के परिवार की जिंदगी बहुत अच्छी चल रही थी।

मार्च महिने में एक दिन समाचार द्वारा पता चला कि हमारे देश में एक व्यक्ति कोरोना पॉजिटिव है। और धीरे-धीरे कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ने लगी। और फिर सरकार ने 20 मार्च, 2020 से देश में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगा दिया। इस वजह से लोग बेरोजगार हो गए और बबीता के पति की कम्पनी भी बंद हो गई। अब बबीता का पति भी बेरोजगार हो गया। धीरे धीरे उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई और पति पत्नी के बीच विवाद होना शुरू हो गया। यह सब ज्ञानवती देखती और फिर डर कर अपने कमरे में चली जाती।

स्कूल के दिनों में ज्ञानवती डांस क्लास में जाती थी। एक दिन ज्ञानवती अलमारी की तरफ भागी और वो अपना सतरंगी रंगों का लहंगा पहनकर व तैयार होकर बाहर आई। उसने अपने पापा से कहा कि 'जल्दी चलो पापा, मैं डांस के लिए लेट हो जाऊंगी।' उसके पापा ने कहा-'क्या. डांस के लिए! बेटा क्या तुम्हें पता नहीं है कि पूरे देश में लॉकडाउन लगा हुआ है, हम बाहर कहीं नही जा सकते। ऐसा सुनते ही जैसे उसकी होठों की मुस्कान गायब हो गई। वो अपने कमरे में चली गई। कपड़े बदलकर उस लहंगे व उन चूड़ियों को देखकर पहले के दिन याद करने लगी कि कैसे वो सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर सूर्य से, पक्षियों से, और हवाओं से बातें करते हुए खिलखिलाती हुई जाती और जीतकर आती। ज्ञानवती अपने टीचर, दोस्त, स्कूल सभी को बहुत याद करती। लॉकडाउन लगने से ज्ञानवती बहुत उदास होती गई। उसके पापा ने उसके पास आकर कहा कि 'चिंता मत करो बेटा, सब बहुत जल्द ठीक हो जायेगा और फिर तुम पहले की तरह खिलती हुई जाओगी और जीत कर आओगी फिर से मुझे तुम पर गर्व होगा। चलो, अब जल्दी से तुम एक काम करो कि पहले कि तरह तैयार होकर डांस करो और हम सभी परिवार वाले तुम्हारा डांस देखेंगे। ऐसा सुनते ही ज्ञानवती के होठों पर हंसी फूट पडी और ज्ञानवती के पापा ने उसको गले लगा लिया।

✍नगीना यादव, कक्षा 10, उम्र 14 वर्ष

शिक्षा का महत्व

रामपुर गांव में सुनील और सन्दीप नाम के दो दोस्त रहते थे। वो दोनों साथ ही स्कूल में पढ़ते थे। सुनील का पढ़ाई में बहुत मन था और सन्दीप का पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। सन्दीप ने 12वीं कक्षा पढ़कर स्कूल छोड़ दी। सुनील ने पढ़ाई जारी रखी। सुनील बीए, एमए. पूरी करके अपने गांव लौट रहा था।

रास्ते में उसे अपना दोस्त सन्दीप मिला। सन्दीप ने सुनील से पूछा- भाई, अभी आप क्या कर रहे हो। सुनील ने कहा- भाई, मैं तो एमए, बीए. पूरी करके घर आ रहा हूं। सन्दीप ने कहा- सुनील, एमए, बीए. करके तू क्या करेगा, मजदूरी तो करनी पड़ेगी, क्या कर लेगा पढ़ लिख कर। सुनील चुप रहा और बोला- भाई सन्दीप, आप क्या कर रहे हो ? सन्दीप बोला- मैं मजदूरी कर रहा हूं। दिन के 600-800 रुपये मिल जाते हैं और अपना घर आराम से चला लेता हूं। मुझे कुछ भी करने की जरूरत नहीं मैं तो मजे में रहता हूं। ये कह कर दोनों अपने अपने घर को चल दिए।

सुनील ने गांव आकर अपनी आईएएस. की तैयारी की। सुनील का सपना पूरा हुआ और वह आईएएस. (प्रशासनिक अधिकारी) बन गया।

एक दिन सुनील गांव के लोगों के पास खड़ा था और गांव में हुए खेती के नुकसान और गांव के विकास के लिए बातें कर रहा था। तब सन्दीप ने देखा, सुनील आईएएस. बन चुका है और वह लोगों की मदद कर रहा है। सन्दीप ने सुनील से माफी मांगी और बोला- भाई, मुझे माफ कीजिए मैंने आपको कितना बुरा भला बोला। अगर उस दिन मैं भी 12वीं पढ़कर स्कूल नहीं छोड़ता तो आज आपकी तरह सफल बन गया होता।

शिक्षाः- जिन्दगी में सफल होने का एक तरीका- निरंतर शिक्षा ग्रहण करते रहना लें

✍पठान खान, कक्षा 11, उम्र 15 वर्ष

मदद करना

11 वर्ष की माया एक छोटे से गांव में, एक छोटे से घर में रहती है। उस घर में एक खिड़की है और वह खिड़की के अन्दर से हर दिन बाहर देखती है। उस रोशनदान में एक कबूतर आया करता था। माया उस कबूतर को रोज खाना पानी देती थी। कोरोना महामारी के कारण जब माया स्कूल नहीं जा पा रही थी तब माया ने सोचा कि क्यूं ना मैं एक पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ाई करूं। तभी माया ने अपनी पुस्तकें उठाई और एक गहरी छाया देने वाले पेड़ जो कि उसके घर के बाहर था- वहां जाकर पढ़ाई करने लगी। कुछ देर के पश्चात् माया को कुछ पक्षी दिखे। वे पेड़ पर अपना घोंसला बना रहे थे। तभी, थोड़ी देर बाद माया को जमीन पर एक पक्षी गिरा दिखाई दिया, जो भूखा प्यासा था। प्यास के कारण वह उड़ भी नहीं पा रहा था। माया ने उसे उठाया और अपने घर ले आई। कमजोर पक्षी को माया ने पानी पिलाया, कुछ दाने खाने के लिए भी दिये। कुछ समय बाद कमजोर पक्षी ठीक हो गया था और अब वह पक्षी उड़ भी सकता था। माया को बहुत खुशी हुई कि कमजोर पक्षी ठीक हो गया है। माया ने सोचा कि जीव जन्तुओं को पानी की आवश्यकता है और उसने अपने घर के आस-पास, अपने घर की छत पर और अपने बगीचे के पेड़ों पर पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था की। माया ने अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक कर दिया कि वे भी अपने आस-पास के पेड़ों, बगीचों में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करें। माया व उसके दोस्तों ने मिलकर इस कार्य को करने में एक दूसरे की मदद की।

✍रूकसाना बानो, कक्षा बीए. (प्रथम वर्ष), उम्र 17 वर्ष

बचपन

बचपन, जीवन का सबसे मस्ती भरा वक्त होता है। ऐसे ही एक बार तीन बच्चे एक मंदिर से खेलते-खेलते बहुत देर तक आगे जाते रहे। उन्हें पता भी नहीं लगा कि वो अपने मम्मी-पापा से कितना दूर आ गए। वो कभी पकड़म-पकड़ाई तो कभी बर्फ-पानी, बस खेलते गए और चलते गए। देखते ही देखते सूरज ढ़लने लगा और अंधेरा होने लगा। अब उन लोगों को डर भी लग रहा था लेकिन वो अपने मम्मी-पापा से बहुत दूर आ गए थे। उन्हें तो ये भी नहीं पता था कि वो कहां हैं। वो अपने मम्मी पापा को ढूंढने लगे। तभी थोड़ी दूर आगे जाने पर उन्हें एक पुलिस स्टेशन दिखा। वो वहां गए और उनको सब कुछ बताकर उनसे मदद मांगी। पुलिस ने खोजबीन करके उन बच्चों को अपने मम्मी-पापा के पास पहुंचा दिया।

(यह कहानी इस तस्वीर पर लिखी गई)

निवेदिता, कक्षा 4, उम्र, 8 वर्ष

दोस्तों के बिना जीवन कैसा

दोस्तों के बिना जीवन एकदम खाली खाली लगता है क्योंकि जब वो संग होते हैं कब समय कट जाता है पता ही नहीं चलता। उनके संग हम खेलते हैं, उन्हें अपनी बातें बताते हैं। मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है कृष्णा। वह मुझे अपना भाई मानता है। हम बहुत अच्छे दोस्त हैं। कोरोना में मेरे स्कूल के कई दोस्त दूर हो गए। हम मिल नही पाते थे और मेरा मन भी नहीं लगता था।

मेरे घर के आस पास मेरी उम्र के ही बहुत सारे लड़के रहते थे। मैं कभी उनसे बात नही करता था। एक दिन मेरी मां ने मुझे कहा कि जाओ उनके साथ खेलो, पर थोड़ा ध्यान से। तुम अंदर उदास बैठे रहते हो, वो सब भी तुम्हारे उम्र के ही हैं कब तक ऐसे उदास रहोगे।

तब मैं बाहर उनके पास गया और उन्होंने मुझे अपने साथ क्रिकेट खेलने को कहा। ऐसे तो सभी मेरे दोस्त बने पर उनमें से मोहित मेरा बहुत अच्छा दोस्त बना। हम दोनों अपने बाकी दोस्तों के साथ साईकिल चलाते थे और बहुत मजे करते थे। कोरोना के इतने मुश्किल समय में भी मैं अपने दोस्तों के साथ खुश था। सच में, दोस्तों के बिना जीवन कुछ भी नही है। हमारे जीवन में जैसे हर चीज़ का महत्व होता है उसी तरह दोस्त तो बहुत ही महत्व रखते हैं।

✍अश्विन एरियल, कक्षा 9, उम्र 14 वर्ष

मेंढ़क का साहस

रविवार का दिन था। सीता पढ़ रही थी। अगले दिन उसकी परीक्षा थी। उसका छोटा भाई विमल उसको देख कर हंस रहा था क्योंकि वह पढ़ने में बहुत कमजोर थी।

सीता के दादाजी सारी बात समझ गये थे।

रात को सोने से पहले विमल ने कहा- दादाजी कोई कहानी सुनाइए!

दादाजी ने कहानी सुनाना शुरू किया।

बहुत समय पहले की एक बात है। एक तालाब में बहुत सारे मेंढ़क रहते थे। तालाब के बीच में लोहे का एक ऊंचा और चिकना खम्भा लगा हुआ था।

एक दिन सब मेंढ़कों ने मिलकर विचार किया कि हम एक खेल खेलते हैं। इस खम्भे पर जो मेंढ़क चढ़ जाएगा वह इस तालाब का राजा कहलाएगा। सभी तालाब के मेंढ़कों ने भाग लिया, पर कोई नहीं चढ़ पाया। एक छोटा मेंढ़क बोला मैं भी इस खेल को खेलना चाहता हूं। सब मेंढ़क हंसने लगे। हम तो नहीं चढ़ पाए. तू क्या इस खम्भे के ऊपर चढ़ पाएगा? बड़ा आया राजा बनने।

छोटा मेंढ़क धीरे-धीरे खम्भे के ऊपर चढ़ने की कोशिश करने लगा। वह बहुत बार नीचे गिरा और फिर उठ कर खम्भे में चढ़ने की कोशिश करता रहा। इतनी कोशिशों के बाद वह अंत में ऊपर जा पहुंचा और इस तालाब का राजा बन गया जबकि दूसरे मेंढ़कों ने खंभे में चढ़ने को मजाक में ले लिया, और राजा बनने की कोशिश भी नहीं की।

कहानी के खत्म होते ही विमल ने अपनी बहन से माफी मांगी और उसे ये बात समझ आ गयी कि किसी पर भी हंसना नहीं चाहिए, कोई भी कमजोर नहीं होता।

✍गुड्डी चरपोटा, कक्षा एमए. (इतिहास), उम्र 23 वर्ष

बालिका शिक्षा

देसूला गांव में माही, काजू, रिया तीन सहेलियां रहती थीं। काजू और रिया दोनों बहनें थी। तीनों एक ही मोहल्ले में रहती थी। माही के पिताजी व्यापारी थे जिनका नाम मोहन था। काजू और रिया के पिताजी मजदूर थे जिनका नाम शामू था।

काजू और रिया के पिताजी मजदूरी पर जाते और उससे जो पैसे मिलते थे उससे वह घर का खर्चा चलाते और रिया, काजू की पढ़ाई में लगा देते थे। सब कुछ अच्छे से चल रहा था। एक दिन अचानक गांव में कोरोना नामक एक संक्रमण आया। जिसकी चपेट में पूरा देश ही नही बल्कि पूरा विश्व आ चुका था। देश के हालात को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाने का आदेश दे दिया। जिसका पालन पूरे देश ने किया।

जैसा कि लॉकडाउन लग चुका था- काजू और रिया के पिताजी मजदूर थे जिस कारण वह मजदूरी पर नहीं जा पा रहे थे। घर की स्थिति खराब होने लगी पर सरकार ने भामाशाह योजना से लॉकडाउन में गरीबों की मदद की।

कुछ महिनों बाद लॉकडाउन खुलने की खबर सुनकर काजू और रिया को वापस स्कूल जाने की खुशी होने लगी। रिया और काजू का आगे पढ़ने का बहुत मन था पर घर की स्थति ठीक नहीं थी कि उन्हें आगे तक पढाई करवाई जा सके। तब रिया और काजू के पिताजी ने निर्णय लिया कि अब दोनों बच्चों का विवाह कर देना चाहिए। इस विचार से रिया और काजू की माताजी भी सहमत थी। इस बात को सुन कर रिया और काजू चिन्ता में पड़ गई। उन्हें तो अभी आगे की पढ़ाई करनी है। तब वह अपनी दोस्त माही के घर जाती हैं और उससे मदद मांगती हैं थी वह उनके माता-पिता को समझाएं।

तब माही अपने पिताजी मोहन को ले कर काजू और रिया के घर जाती है। माही के पिताजी काजू, रिया के पिताजी शामू को समझाते हैं पर वह अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में बताते हैं और उनकी बात नही मानते हैं। तब माही और मोहन निराश होकर घर वापस लौट जाते हैं।

माही एक एमिड नाम की संस्था से जुड़ी हुई थी। माही के मन विचार आता है कि वो अपने संस्था के टीचर से मदद मांगेगी और वो जरूर उसकी बात सुनेंगे और रिया काजू की मदद करेंगे।

तब सीमा दीदी और अनूप सर काजू, रिया के घर आते हैं और उनके पिताजी और माताजी की स्थिति के बारे में सुनते हैं। तब अनूप सर ने कहा कि वो उन दोनों की स्कूल फीस भरेंगे और उन्होंने स्कॉलरशिप के बारे में भी बताया। उन्होंने बाल विवाह से होने वाले नुकसान के बारे में भी बताया।

इसी बात पर रिया बोली कि मैं बच्चों को ट्यूशन पढ़ाऊंगी, अपनी और काजू की पढ़ाई का खर्चा खुद निकालूंगी। तब उनके पिताजी समझ जाते हैं और उन्हें पढ़ाने का फैसला करते हैं। इस बात को सुन कर सब खुश हो जाते हैं। काजू रिया, माही, सीमा दीदी और अनूप सर को धन्यवाद बोलतीं हैं।

एमिड संस्था ने रिया को गांव में ट्यूशन की नौकरी दे दी। वह खुद पढ़ती और बच्चों को भी पढ़ाती है। अब माही काजू और रिया तीनों खुशी-खुशी एक साथ स्कूल जातीं हैं।

बेटी भार नहीं आभार है, बेटी का अधिकार है।

✍मनप्रीत कौर, कक्षा बीए. द्वितीय वर्ष, उम्र 18 वर्ष

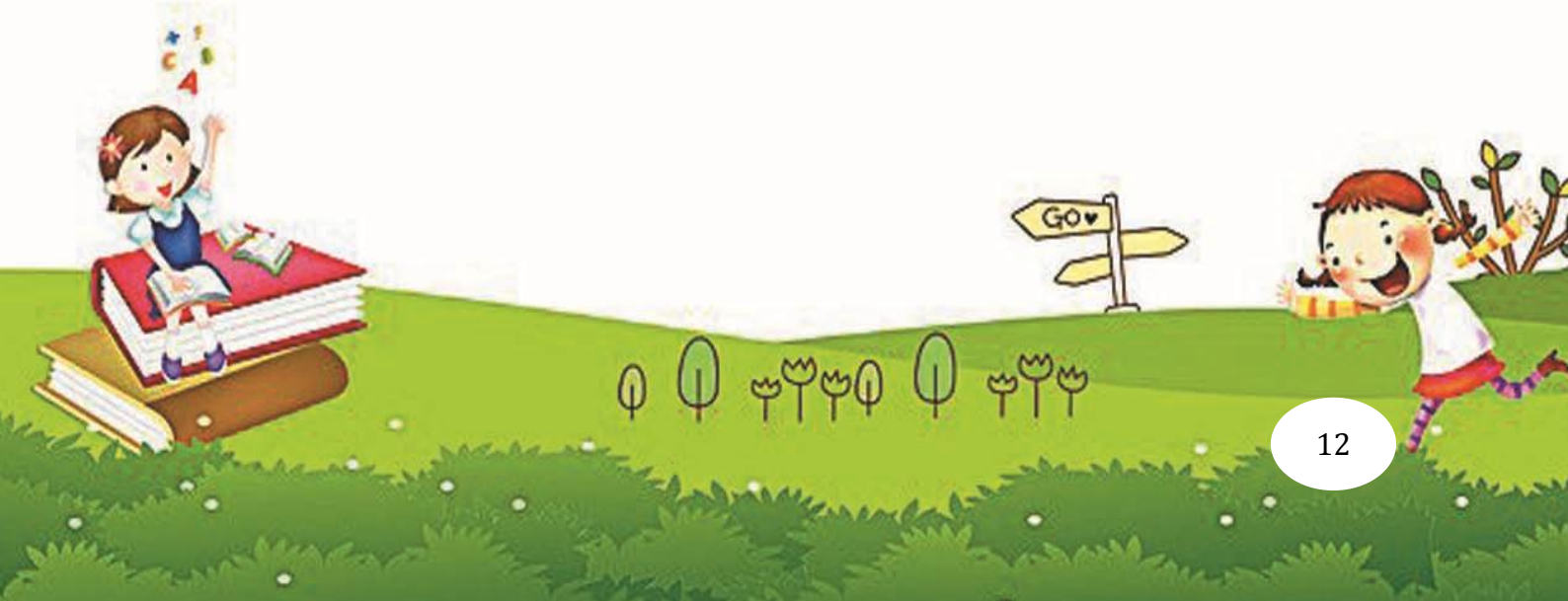

लगन

दो मित्र विकास और सकल एक ही गांव खेमपुर में रहते थे। सकल की आयु बारह वर्ष थी। उसकी मां शीला घर का कामकाज देखती थी। उसके पिता बूरा चौधरी खेत में काम करते थे। सकल घर के कामकाज में अपनी मां की मदद करता था। वह अपने छोटे भाई जीतू और बहन सीतू की भी देखभाल करता था। उसके चाचा श्याम ने मेट्रिक की परीक्षा पास की थी, लेकिन वह घर में बेकार बैठा था क्योंकि उसे कोई नौकरी नहीं मिली। बूरा और शीला चाहते थे कि उनका बेटा सकल पढ़े लिखे। वे उस पर गांव के स्कूल में नाम लिखाने के लिए जोर देते थे जिसमें उसने शीघ्र प्रवेश पा लिया। उसने पढ़ना शुरू किया और उच्चतर माध्यमिक की परीक्षा पास कर ली। उसके पिता ने उसे अपनी पढ़ाई जारी करने के लिए राजी कर लिया। उन्होंने सकल के लिए कम्प्यूटर के व्यावसायिक कोर्स में अध्ययन के लिए कर्ज लिया। सकल प्रतिभाशाली था और आरंभ से ही पढ़ाई में उसकी रूचि थी। उसने बड़ी लगन और उत्साह से अपना कोर्स पूरा किया। कुछ समय के पश्चात् उसे एक प्राइवेट फर्म में नौकरी मिल गई। उसने एक नए प्रकार के सॉफ्टवेयर को डिजाइन भी किया। इस सॉफ्टवेयर से फर्म को अपनी बिक्री बढ़ाने में सहायता मिली। उसके बॉस ने उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उसे पदोन्नति दी।

✍प्रकाश मेघवाल, कक्षा 10, उम्र 16 वर्ष

सेठ जी का कर्ज मां का फर्ज

एक पेड़ पर एक गिलहरी और उसके दो छोटे-छोटे बच्चे रहते थे। वे हमेशा अपनी मां के साथ रहते थे। बड़े बेटे का नाम लालू और छोटे बेटे का नाम कालू था। वे दोनों हमेशा अपने घर के आसपास ही खेलते थे। उसके घर के पास धीरे-धीरे बहुत प्रजाति की गिलहरीयों के परिवार आने लगे और अलग-अलग पेड़ पर अपना निवास स्थान बनाने लगे जिस वजह से खाने की कमी होने लगी।

समय बदलता गया और कालू, लालू बड़े हुए और उनकी मां बूढ़ी हो गई इसलिए वह खाने की तलाश में नहीं जा पाती थीं।

कालू व लालू दोनों भाई अपने गांव से दूर रोज अलग- अलग कस्बे में खाने की तलाश में जाते और अपनी बूढ़ी मां को दाना लाकर दे देते। एक दिन कालू व लालू को लगा कि हम रोज खाने की तलाश में जाते हैं और अपना सारा खाना रोज कैसे खत्म हो जाता है। लालू कहता हम तो खाना मां को देते हैं। मां इतना खाना कहां ले जाती है ?

कालू व लालू दोनों पता लगाने के लिए माँ पर नज़र रखते हैं। कालू और लालू दोनों पेड़ के पीछे छुप जाते हैं और मां के घर से बाहर निकलने का इंतजार करते हैं दोनों भाई मां का पीछा करते हैं। गिलहरी एक सेठ के घर जाती है। हाथ में एक पोटली ले जाकर सेठजी को देती है और कहती है- जब मेरे बेटे छोटे थे तो आपने मुझे जो दाने दिए थे आज मैं वो सारे चुकाना चाहती हूं। यह सुनकर कालू व लालू को बहुत ही बुरा लगता है कि उन्होंने अपनी मां पर शक किया। कालू, लालू की आंखें भर आती हैं और दोनों ज्यादा मेहनत कर अपनी माँ को दाना लाकर देने की कोशिश में लग जाते हैं ताकि किसी दिन सेठजी का कर्ज पूरा हो और हम पूरे दाने खुशी खुशी खा पायें।

✍गायत्री खटीक, कक्षा बीए. (द्वितीय वर्ष), उम्र 19 वर्ष

स्कूल बिना जीवन कैसा

स्कूल एक मन्दिर है जो हमें शिक्षा रूपी प्रसाद देता है। स्कूल में एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है कि वहां भेदभाव नहीं किया जाता। सभी बच्चों को एक समान ज्ञान प्रदान किया जाता। नई-नई बातें सिखाई जाती है और बहुत सी नई-नई जानकारियां मिलती है। अगर हम स्कूल नही जायेंगे, तो हमें ये कभी भी प्राप्त नहीं होंगी। मैं अपने शिक्षकों से हर रोज प्रेरित होती हूं।

लॉकडाउन लगने से पहले मैं रोजाना अपनी दोस्तों के साथ स्कूल जाया करती थी, मेरे स्कूल में नए-नए कार्यक्रम होते थे। 15 अगस्त और 26 जनवरी को गांव के सारे लोग स्कूल में कार्यक्रम को देखने आते थे जिससे हमारा बहुत उत्साह बढ़ता था। स्कूल में कई प्रकार की जयंतियां भी मनाई जाती थी।

जब स्कूल में लंच होता तब हम सभी दोस्त साथ में पानी पूरी खाने जाते थे। उस समय बहुत ही मजा आता था। बहुत याद आती है अपने सारे दोस्तों की, स्कूल से घर लौट कर आते समय कभी झगड़ा होता था तो कभी मस्ती होती थी। कभी धूप तो कभी छांव, कभी बारिश का मौसम! बस हर दिन हरे भरे खेतों से, शिव जी के मंदिर में दर्शन कर घर आ जाते थे।

जब मुझे कुछ समझ में नहीं आता था तो मैं दोस्तों से पूछ लेती थी। मुझे नहीं पता कि मैं एक बेहतरीन दोस्त हूं या नहीं लेकिन जिनके साथ मेरी दोस्ती है वह बहुत ही बेहतरीन और होनहार लड़कियां हैं। दोस्तों का मार्गदर्शन होना भी बहुत जरूरी होता है। उनसे परिश्रम की सीख और ऐसी जानकारियां मिलती हैं जो हमारे जीवन के लिए बहुत ही जरूरी है।

जब से कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया पर हमला कर रखा है। लोगों में डर बैठ गया है। जिसके कारण कई लाखों लोगों ने अपनों को खोया है।

मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर के दरवाजों पर ताला लग गया था किन्तु देश में शराब खुलेआम बिक रही थी। शिक्षकों ने शिक्षा को ऑनलाइन की सहायता से बच्चों तक पहुचाया उन्हें कई परेशानियों का सामना करना पडा, फिर भी हमें शिक्षित बनाये रखने के लिए हमारे शिक्षकों ने कोई कमी नही की।

स्कूल और शिक्षा के बिना हमारा जीवन सफल नहीं हो सकता है।

सरोज गुर्जर, कक्षा 11, उम्र 18 वर्ष

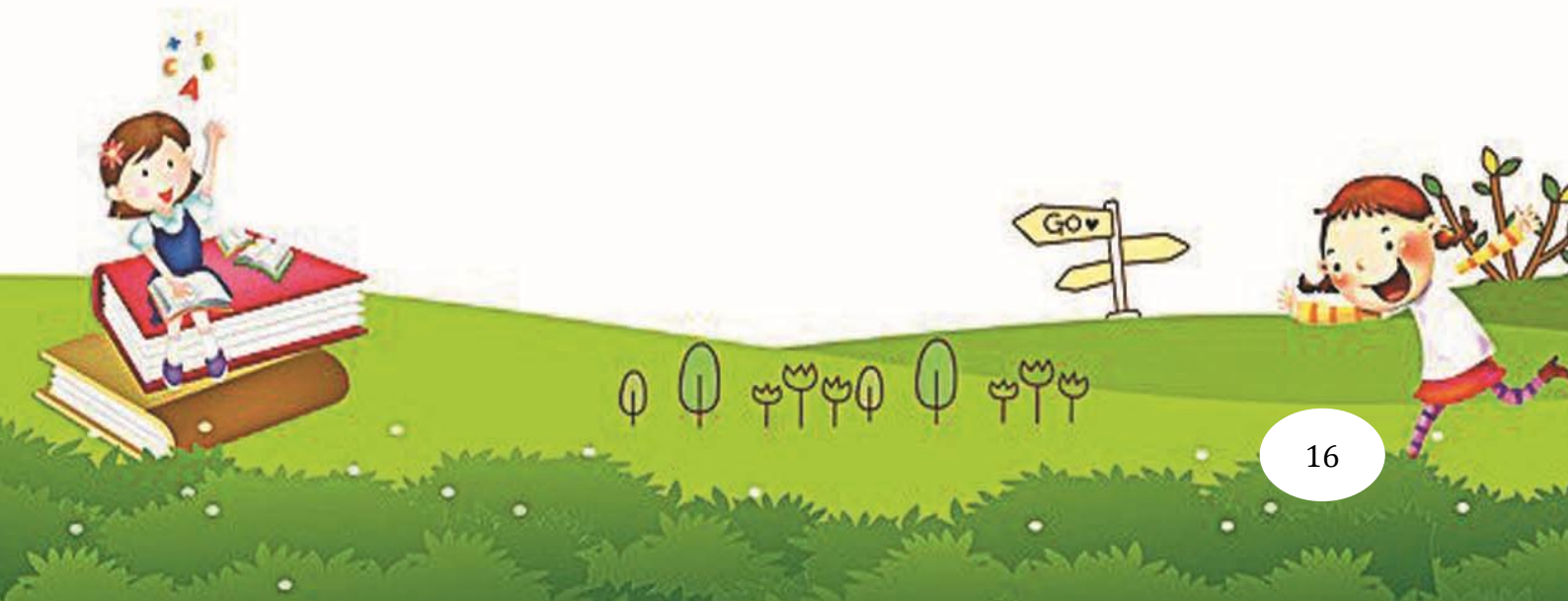

पिता

पिता एक उम्मीद हैं, एक आस हैं
परिवार की हिम्मत और विश्वास हैं।

बाहर से सख्त अंदर से नर्म है,
उसके दिल में दफन कई मर्म हैं।

परिवार संघर्ष की आंधियों में हौंसलों की दीवार है,
परेशानियों से लड़ने को दोधारी तलवार हैं।

बचपन में खुश करने वाला खिलौना है,
नींद लगे तो गोद पर झुलाने वाला बिछौना है।

पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी हैं,
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी हैं।

सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान हैं,
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान हैं।

पिता ज़मीर हैं पिता जागीर हैं,
जिसके पास ये हैं वह अमीर हैं।

✍ देवांशु जांगिड़, कक्षा 10, उम्र 14 वर्ष

गुरू शिक्षा

बाहर बारिश हो रही थी और अन्दर कक्षा चल रही थी।

तभी टीचर ने बच्चों से पूछा - अगर तुम सभी को 100 रूपया दिया जाए तो तुम सब क्या क्या खरीदोगे ?

किसी ने कहा- मैं वीडियो गेम खरीदूंगा.

किसी ने कहा- मैं क्रिकेट का बेट खरीदूंगा.

किसी ने कहा- मैं अपने लिए प्यारी सी गुड़िया खरीदूंगी.

तो किसी ने कहा- मैं बहुत सी चॉकलेट्स खरीदूंगी.

एक बच्चा कुछ सोचने में डूबा हुआ था. टीचर ने उससे पूछा तुम क्या सोच रहे हो? तुम क्या खरीदोगे ?

बच्चा बोला- टीचर जी मेरी माँ को थोड़ा कम दिखाई देता है तो मैं अपनी माँ के लिए एक चश्मा खरीदूंगा.

टीचर ने पूछा- तुम्हारी माँ के लिए चश्मा तो तुम्हारे पापा भी खरीद सकते हैं. तुम्हें अपने लिए कुछ नहीं खरीदना ?

बच्चे ने जो जवाब दिया उससे टीचर का भी गला भर आया.

बच्चे ने कहा- मेरे पापा अब इस दुनिया में नहीं हैं.

मेरी माँ लोगों के कपड़े सिलकर मुझे पढ़ाती है, और कम दिखाई देने की वजह से वो ठीक से कपड़े नहीं सिल पाती है। इसीलिए मैं मेरी माँ को चश्मा देना चाहता हूं। ताकि वो कपड़े सिले और मैं अच्छे से पढ़ सकूँ, और माँ को सारे सुख दे सकूँ।

टीचर- बेटा तेरी सोच ही तेरी कमाई है। ये 100 रूपये मेरे वादे के अनुसार और, ये 100 रूपये उधार दे रहा हूं। जब कभी कमाओ तो लौटा देना और मेरी इच्छा है कि तुम इतने बड़े आदमी बनो कि तुम्हारे सर पे हाथ फेरते वक्त मैं धन्य हो जाऊं.

20 वर्ष बाद .

बाहर बारिश हो रही है और अन्दर कक्षा चल रही है। अचानक स्कूल के आगे जिला कलेक्टर की गाड़ी आकर रूकती है, स्कूल स्टाफ चौकन्ना हो जाता है.

स्कूल में सन्नाटा छा जाता है। जिला कलेक्टर एक वृद्ध टीचर के पैरों में गिर जाते हैं और कहते हैं सर मैं उधार के 100 रूपये लौटाने आया हूं।

वृद्ध टीचर झुके हुए नौजवान कलेक्टर को उठाकर भुजाओं में भर लेता है और रो पड़ता है।

✍चन्द्रेश जांगिड़, कक्षा 8, उम्र 13 वर्ष

दुर्गा गायरी

विश्राम मीणा

प्रकाश मेघवाल

अक्षिता

खुशबु सैनी

सलोनी ठाकुर

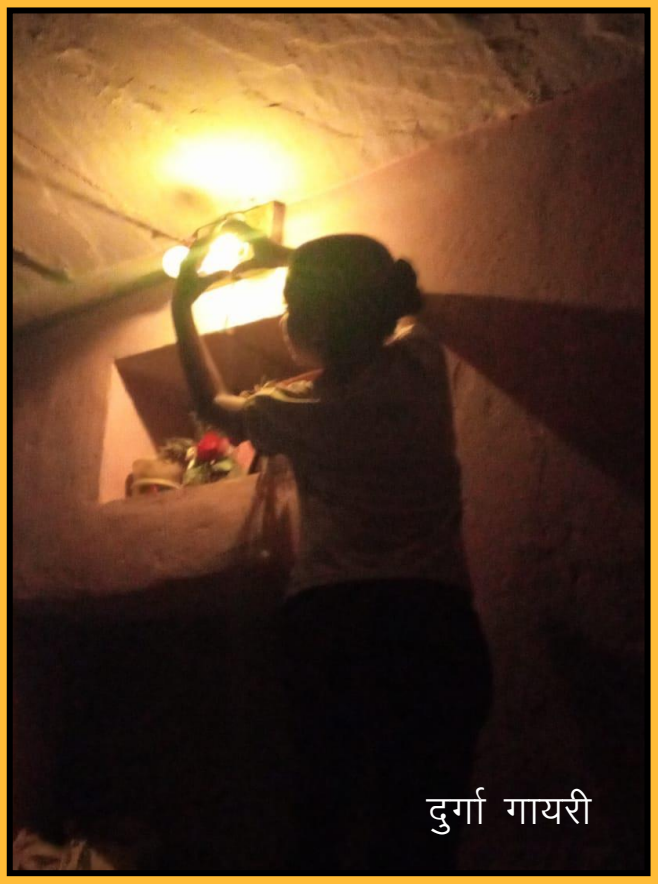

दुर्गा गायरी

धनराज सैनी

गायत्री खटीक

गुड्डी चरपोटा

धनराज सैनी

लाली निनामा

रूकसाना बानू

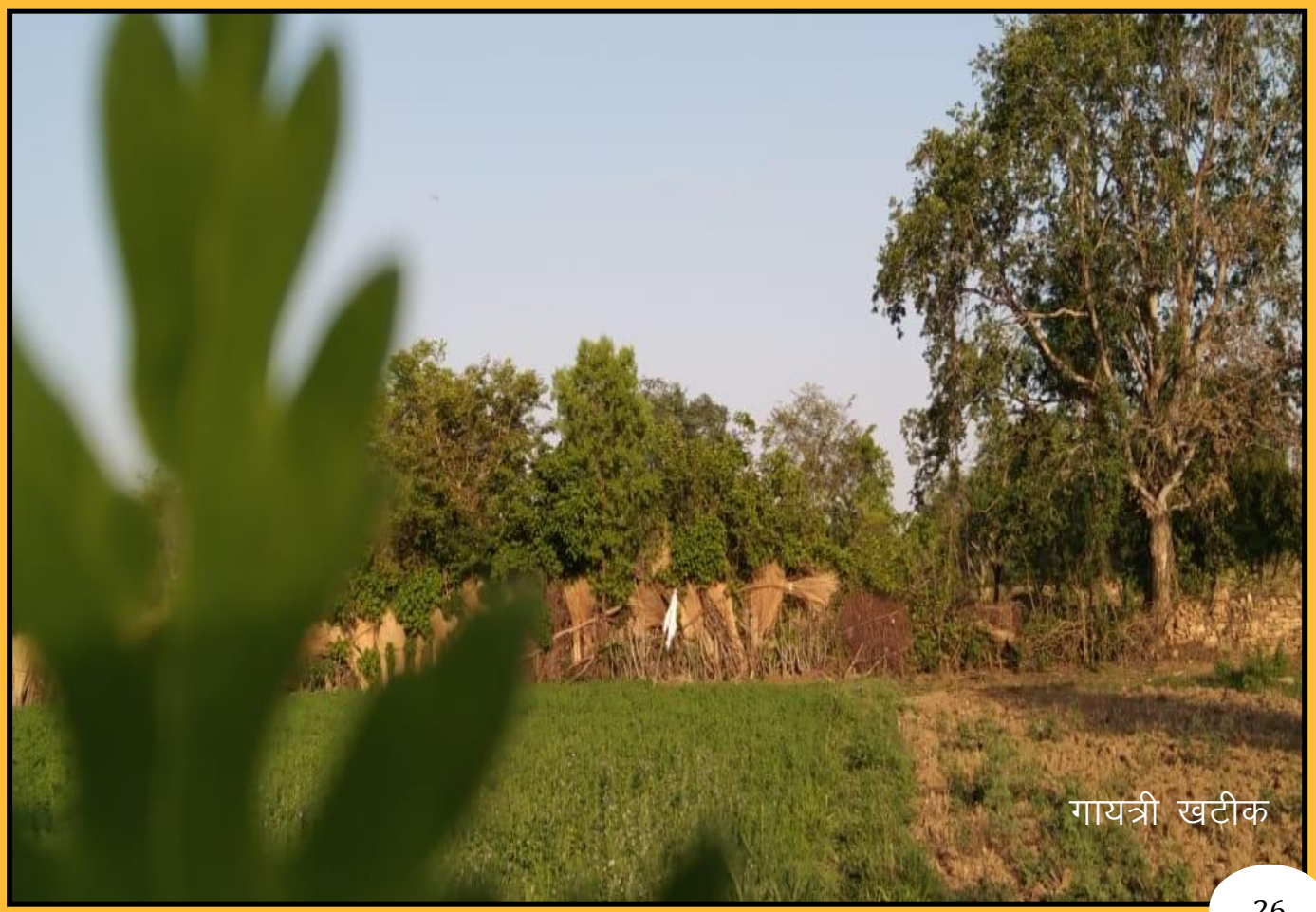

गायत्री खटीक

विश्राम मीणा

संतोष कुँवर

लाली निनामा

लवकुश

मनप्रीत

पठान खान

रूकसाना बानू

संतोष कुँवर

संतोष कुँवर

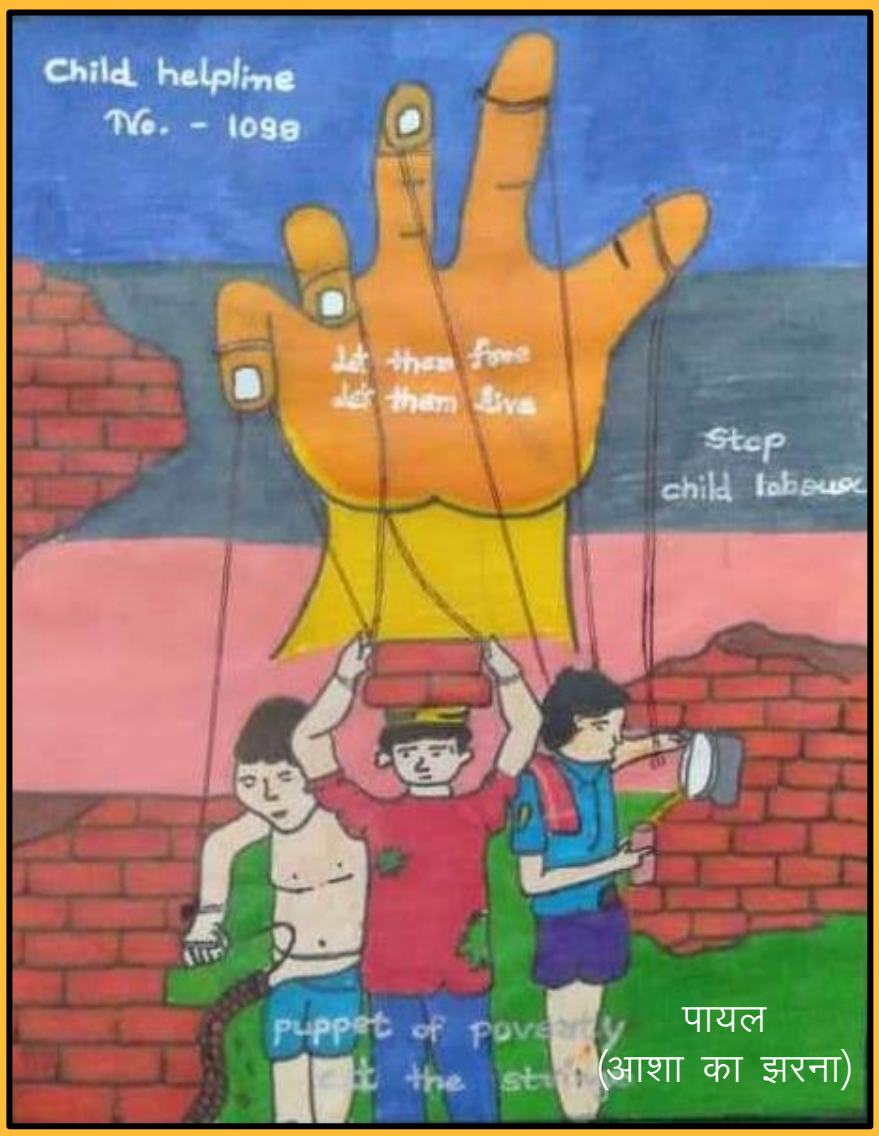

पायल
(आशा का झरना)

कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक प्रभाव
कोरोना वायरस के कारण पूरे देश में जो बच्चे अपने मां-बाप से दूर रहते थे लॉकडाउन की वजह से अब वे सब अपने परिवारों वालों के साथ समय बिता सकते हैं।	कोरोना काल की वजह से सभी कॉलेज, स्कूल बंद होने के कारण बच्चों की पढ़ाई पर बहुत बुरा असर पड़ा है।
लॉकडाउन में संपूर्ण वाहन चलाने पर प्रतिबिंध होने के कारण से जो इनसे प्रदूषण फैलता था वो कम हुआ है एवं वातावरण में भी बदलाव आया है।	लॉकडाउन के कारण सभी जगह बंद है। इसलिए जो छोटे-मोटे धंधे करते थे वे इससे अपने घरों में कैद हो गए। जो लोग रोड़ पर भीख मांगते थे वो अब भूखे मर रहे हैं।
लॉकडाउन में रोड़ पर वाहनों के न होने के कारण जो दुर्घटनाएं होतीं थीं वह नहीं हो रही हैं।	अब इस कोरोना से मरने वाले लोग एवं अन्य किसी बिमारी से मरने वाले लोगों को एक ही बिमारी का नाम दिया है।
काम में व्यस्त रहने के कारण घरवालों के लिए समय ही नहीं निकाल पाते थे लेकिन कोविड-19 में घर रहने से ये समस्या समाप्त हो गयी।	कई लोग धार्मिक और रूढिवादी अफवाह फैला रहे थे जिस कारण लोगों में भ्रम और नकारात्मकता हो गयी थी।
इस दौरान अपने परिवार के साथ समय बिताने के कारण लोगों को बेहतरीन पथ मिले हैं। अपने घर के बुजुर्गों के साथ समय बिता रहे हैं और रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटा रहे हैं।	जो रोजमर्रा के काम से अपने घर का पेट पालते थे आज उनके लिए एक वक्त की रोटी मुश्किल हो रही है। कई ऐसे मजदूर हैं जो भूखे पेट सो रहे हैं।
कोरोना काल के समय में हम घर से बाहर नहीं निकल सकते थे। मैंने उस समय में लोगों की मदद करने की सोची। मेरे पास कम्प्यूटर था जिससे मैंने अपने घर के लोगों को, अपनी मां को अच्छी जानकारियां दी और खुद को भी नयी चीजें सीखने में व्यस्त रखा।	लॉकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ।

पहले अंक के प्रसारित होने के साथ बच्चों और सहयोगी संस्थाओं की ओर से प्रतिक्रियाएं

- धन्यवाद, मैम बहुत बहुत अच्छा है ---- सोनम कुशवाहा
- धन्यवाद, मैम सर बहुत बहुत अच्छा है ----- सरोज गुर्जर
- धन्यवाद दशम, यूनीसेफ, तबीनाह मैम आप सभी ने हमारी एक नही बल्कि दो कौशलता को विकसित किया और आप सभी यंग राइटर्स (युवा लेखक)
- तैयार कर रहे हैं जो कि बहुत प्रशंसनीय है ----- गौरी सोनी
- सभी चीजें अच्छी हैं धन्यवाद आप सभी को ----- पार्थ बैरवा
- मुझे बहुत पसन्द आयी धन्यवाद मैम ------- शिवानी शर्मा
- मैम बहुत अच्छी किताब है धन्यवाद ------- टीना वर्मा
- धन्यवाद मैम हमें नयी चीजें पढ़ाने के लिए, हमें ऐसी और कक्षाओं में जुड़ने में खुशी होगी ----- तनुष्का
- धन्यवाद मैम इस किताब में सब कुछ बहुत अच्छा है ----- ड़िंपल छीपा

निधी साहू, अशोक, संजीता प्रजापत, शीला बैरवा इन सभी और बाकी बच्चों ने भी तबीनाह मैम, विजय गोयल, तरूणा मैम, दशम, यूनिसेफ को धन्यवाद कहा।

सहयोगी संस्थाओं द्वारा सुझाव व प्रतिक्रियाएं

- धन्यवाद दृश्यम व सभी बच्चों के कार्य को सराहा गया ----- चंद्रकांता
- Excellent work by all kids. Appreciate all organization and Vijay sir for this nice initiative ……. सुनंद सिंह (वर्ल्ड विजन)
- यह शानदार है। इस प्रयास में शामिल सभी बच्चों संस्थाओं और सभी लोगों को बहुत बहुत बधाई और धन्यवाद ------- महेश शर्मा (संधान)
- Congratulations Vijay Bhai, SMILE and UNICEF…. A fantastic initiative.. it looks amazing … all the best -------- रमाकांत (सेव द चिल्ड्रन)

अन्य संस्थाओं द्वारा टेलीफोनिक माध्यम से बधाई और सुझाव दिए गए कार्यशाला को सफल बनाने के लिए सभी संस्थाओं को दृश्यम एलाइंस की ओर से धन्यवाद ।

कार्यशाला-2 में प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
1	विश्राम मीणा	एमिड संस्थान
2	ममता बैरवा	एमिड संस्थान
3	रेनू मीणा	एमिड संस्थान
4	दीपा	एमिड संस्थान
5	लवकुश मीणा	एमिड संस्थान
6	सरीता बैरवा	एमिड संस्थान
7	धनराज सैनी	एमिड संस्थान
8	मनप्रीत	एमिड संस्थान
9	पठान खान	दूसरा दशक बाप
10	प्रकाश	दूसरा दशक बाप
11	मंजू प्रजापत	दूसरा दशक बाप
12	शोभानु भारती	दूसरा दशक बाप
13	नरवताराम	दूसरा दशक बाप
14	रमेश	दूसरा दशक बाप
15	उम्मेदराम	दूसरा दशक बाप
16	मंजू मेघवाल	दूसरा दशक बाप

17	देवांशु	डांग विकास संस्थान
18	सूरजभान	डांग विकास संस्थान
19	थकेन्द्र	डांग विकास संस्थान
20	वीणा	डांग विकास संस्थान
21	चंद्रेश	डांग विकास संस्थान
22	रिंकू	डांग विकास संस्थान
23	उमेश कुमार	डांग विकास संस्थान
24	गुड्डी चरपोटा	गायत्री सेवा संस्थान
25	वंदना मेघवाल	गायत्री सेवा संस्थान
26	लच्छीया कुमारी मीणा	गायत्री सेवा संस्थान
27	लाली निनामा	गायत्री सेवा संस्थान
28	शंकर मीणा	गायत्री सेवा संस्थान
29	कांकू मीणा	गायत्री सेवा संस्थान
30	दुर्गा गायरी	राजसमन्द जन विकास संस्थान
31	रूकसाना बानू	राजसमन्द जन विकास संस्थान
32	संतोष कुंवर	राजसमन्द जन विकास संस्थान
33	गायत्री खटीक	राजसमन्द जन विकास संस्थान

कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय

अलवर मेवात शिक्षा एवं विकास संस्थान (एमिड) अलवर

हम एक स्वैच्छिक, गैर लाभकारी और गैर सरकारी संगठन हैं, जो 2000 में सोसायटी अधिनियम 1958 के तहत पंजीकृत है। एमिड का दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा सामाजिक-आर्थिक विकास और समाज और व्यक्तियों के सांस्कृतिक संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एमिड, राजस्थान के पाँच जिलों-अलवर, करौली, सीकर, अजमेर और सिरोही के तकरीबन 523 गाँवों में कार्य कर रही है। वर्तमान में संस्थान बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा और छात्रवृत्ति, बाल विवाह, यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य के मुद्दों पर तकरीबन 25000 बच्चों, किशोर-किशोरीयों के साथ विभिन्न संस्थाओं के सहायोग से कार्य कर रही है।

डांग विकास संस्थान

डांग विकास संस्थान, करौली वर्ष 2005 से पूर्वी राजस्थान के 4 जिले करौली, धौलपुर, भरतपुर व दौसा में गरीबतम परिवारों, खान मजदूरों, विधवा महिलाओं, सिलिकोसिस पीडितों, पत्थर तराशी श्रमिकों आदि के साथ आजीविका विकास, अधिकारिता एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य मुद्दों पर कार्य कर रही है। संस्था द्वारा आंगनबाडी केन्द्रों व किशोर किशोरियों के साथ स्वास्थ्य व शिक्षा के मुद्दों पर भी कार्य कर रही लें

गायत्री सेवा संस्थान

ग्राम स्वराज के गांधीवादी दृष्टिकोण से प्रेरित, गायत्री सेवा संस्थान वर्ष 1986 में स्थापित एक गैर सरकारी संगठन है, जो राजस्थान के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में एकीकृत सतत सामाजिक, आर्थिक, विकास की दिशा में काम कर रहा है। गायत्री सेवा संस्थान द्वारा प्रारंभिक हस्तक्षेप शिक्षा को बढ़ावा देने और जनजातीय समुदाय में उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के महत्व पर केंद्रित थे। वर्तमान में राजस्थान और हरियाणा राज्य में कार्यरत है।

राजसमन्द जन विकास संस्थान

राजसमन्द जन विकास संस्थान एक गैर सरकारी संगठन है जिसकी स्थापना 2003 में एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए की गई जहाँ सभी के लिए समान अवसर, न्याय, समानता और सम्मान हो और यह कार्य खासकर महिलाओं और किशोर व किशोरियों के लिए किया जा रहा है। राजसमन्द जन विकास संस्थान के सहयोग के लिए एवं समर्थन संगठन के रूप में राजसमन्द महिला मंच संगठन का निर्माण 1998 में किया गया था। राजसमन्द जन विकास संस्थान द्वारा दलित, शोषित, वंचित समुदाय की महिलाओं, किशोर-किशारियों को सशक्त किया जा रहा है। बाल-विवाह, शिक्षा, करियर काउंसलिंग, स्वास्थ्य, सरकारी योजना, महिला हिंसा इत्यादि मुधों पर कानूनी जानकारी देकर जागरूक व क्षमता वर्धन प्रशिक्षण देकर सशक्त किया जा रहा है।

दूसरा दशक बाप, फलौदी

2000 में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद व पधमभूषण स्व. श्री अनिल बोर्दिया व कुछ अन्य प्रतिष्ठित शिक्षाविदों ने मिल कर फाउंडेशन फॉर एज्यूकेशन एंड डवलपमेंट (थ्म्क) ट्रस्ट की स्थापना की थी। इस ट्रस्ट के तहत 2001 में ही राजस्थान में दूसरा दशक परियोजना शुरू की गई थी। दूसरा दशक की शुरूआत दो जिलों के 2 ब्लॉक्स से की गयी थी और वर्तमान में 7 जिलों में कार्य विस्तार के साथ यह संख्या 9 ब्लॉक्स तक पहुंच गई है। शुरूआती 2 ब्लॉक्स में बाप (जोधपुर) ब्लॉक शामिल था।

यह परियोजना विशेष रूप से 11 से 20 वर्ष तक के किशोर-किशोरियों की शिक्षा के लिए शुरू की गई थी अतः इसका नाम ''दूसरा दशक'' रखा गया। दूसरा दशक ने समुदाय में शिक्षक-प्रशिक्षण के माध्यम से जागरूकता का वातावरण बनाया,जिसके कारण हजारों की संख्या में बच्चे, किशोर-किशोरी,युवा,महिलाएं आदि विभिन्न गतिविधियों में जुड़े हैं। बाप/फलोदी क्षेत्र में दूसरा दशक द्वारा लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं।

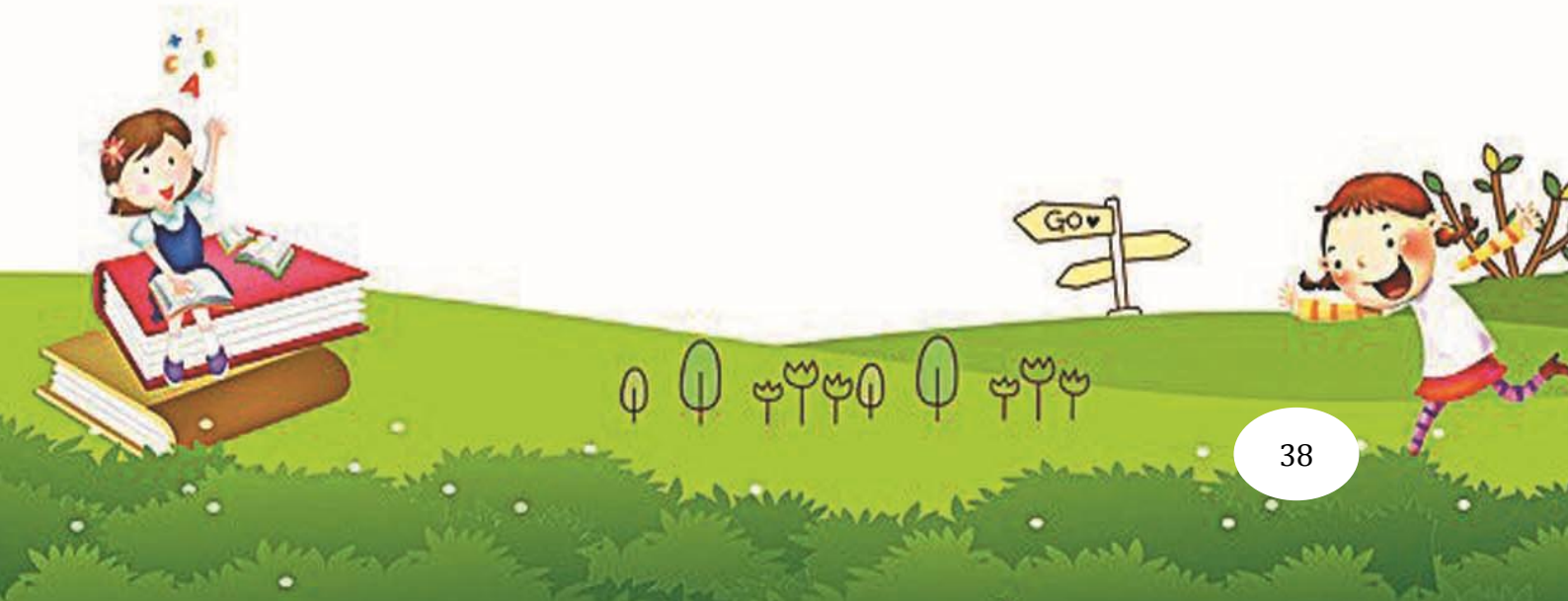

unicef for every child

DASHAM ALLIANCE FOR CHILD RIGHTS

RIHR Resource Institute for Human Rights

GSS 34 Years Towards Sustainable Development

EQUALITY IN ALL ITS TOTALITY DAANG VIKAS SANSTHAN

राजसमंद जन विकास संस्थान राजसमंद महिला मंच (संगठन)

amjed

महिला जन अधिकार समिति MAHILA JAN ADHIKAR SAMITI

ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान

राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल

''दशम एलाइंस''

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर

Email ID – rihr.rajasthan@gmail.com

सम्पर्क–0141–3532799, 9460387130, 7878055137